प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ

डॉ.जशाभाई पटेल

भारतीय आर्यभाषाओं को काल की दृष्टि से तीन वर्गों में विभक्त किया जाता है।

(क) प्राचीन भारतीय आर्य-भाषा (प्रा0भा0आ0भा0 काल) – 1500 ई0 पूर्व से 500 ई0 पूर्व तक।
(ख) मध्य भारतीय आर्य-भाषा (म0भा0आ0भा0 काल) – 500 ई0 पूर्व से 1000 ई0 तक।
(ग) आधुनिक भारतीय आर्य-भाषा (आ0भा0आ0भा0 काल) – 1000 ई0 से वर्तमान समय तक।

प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ

डॉ.जशाभाई पटेल

भारतीय आर्यभाषाओं को काल की दृष्टि से तीन वर्गों में विभक्त किया जाता है।

(क) प्राचीन भारतीय आर्य-भाषा (प्रा0भा0आ0भा0 काल) – 1500 ई0 पूर्व से 500 ई0 पूर्व तक।

(ख) मध्य भारतीय आर्य-भाषा (म0भा0आ0भा0 काल) – 500 ई0 पूर्व से 1000 ई0 तक।

(ग) आधुनिक भारतीय आर्य-भाषा (आ0भा0आ0भा0 काल) – 1000 ई0 से वर्तमान समय तक।

प्राचीन भा.आ.भाषा-

प्राचीन भारतीय आर्य-भाषा (प्रा0भा0आ0भा0 काल)
समय– 1500 ई0 पूर्व से 500 ई0 पूर्व तक।

मुख्य दो भाषा-वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत

वैदिक संस्कृत- वेदो, संहिता तथा ब्राह्मण ग्रथों की भाषा होने के कारण

ऋग्वेद विश्व का सबसे प्राचीन ग्रंथ

ऋग्वेद का समय अनिश्चित है। ऋग्वेद कई शताब्दियों और कई स्थानों की रचना है।

विदयमान भाषा-भेदों के कारण ऋग्वेद के दस मंडलो में से प्रथम और दशम मंडल अपेक्षाकृत बाद की रचना प्रतीत होती हैं।

ऋग्वेद की भाषा छान्दस होने के कारण शुद्ध

डॉ० बाबूराम सक्सेना ने प्रतिपादित किया है कि ऋग्वेदसंहिता के सूक्ष्म अध्ययन से मालूम होता है कि उसके सूक्तों में जहाँ तहा बोली भेद हैं।

लौकिक संस्कृत- वैदिक की किसी लोक बोली से विकसित सुसंस्कृत रूप

वाल्मिकी रामायण में हनुमान- सीता प्रसंग

कालिदास के कुमार सम्भव में वर्णित है कि शंकर एवं पार्वती के विवाह के अवसर पर सरस्वती शंकर से जिस भाषा में बात करती हैं उससे भिन्न भाषा में वे पार्वती से बात करती हैं। भरत मुनि ने नाना देशों के प्रसंग के अनुसार भाषिक प्रयोगों का विधान किया है।

प्राचीन भा.आ.भाषा-

वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत भाषाओं की सामान्य प्रवृत्तियों

(1) वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत भाषाएँ श्लिष्ट योगात्मक हैं।

(2) वैदिक भाषा में विसर्ग के दो उपस्वन भी मिलते हैं। द्‌वि-ओष्ठ्‌य संघर्षी(उपध्मानीय) एवं कंठ्‌य संघर्षी(जिह्‌वामूलीय)।जो लौकिक संस्कृत में दोनों उपस्वनों का प्रयोग होना समाप्त हो गया तथा इनके स्थान पर विसर्ग का ही प्रयोग होने लगा।

(3) वैदिक संस्कृत में रूप-रचना में अधिक विविधता और जटिलता है। संस्कृत में आकर रूप अधिक व्यवस्थित हो गए और अपवादों तथा भेदों की कमी हो गयी। संस्कृत में आकर रूप अधिक व्यवस्थित हो गए और अपवादों तथा भेदों की कमी हो गयी।

(4) वैदिक संस्कृत अनुतानात्मक है जिसके उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित स्तर हैं। लौकिक संस्कृत में अनुतान के स्थान पर बलाघात का प्रयोग होने लगा।

(5) दोनों कालों की भाषाओं में तीन लिंग और तीन वचन हैं।

डॉ.जशाभाई का

आभार सह धन्यवाद